आपका बंटी की भाषा-शैली

भाषा जीवन और साहित्य के बीच कड़ी है। यह भावों की वाहिका होने के कारण सामाजिक उपलब्धियों तथा व्यक्तिगत अनुभवों एवं विचारों को समाज तक संप्रेषित करती है। जहाँ तक साहित्यिक भाषा का प्रश्न है। वह जनभाषा में से अपने विकास की राह निकालती है। चूंकि जनभाषा से कटकर साहित्यिक भाषा अधिक समय तक जी नहीं सकती है। साहित्य में भाषा सौष्ठव सभी विधाओं का भिन्न-भिन्न होता है।

उपन्यास की भाषा में गति होती है जो उत्तरोत्तर चरमोत्कर्ष की ओर बढ़ती जाती है। इस कारण उपन्यास की भाषा कृत्रिम या निर्जीव या अगतिशील न होकर जीवंत एवं प्रवाह युक्त होती है। मुहावरों, लोकोक्तियों एवं शब्द शक्तियों के सटीक प्रयोग से उपन्यास की संवेदना को उद्घाटित किया जाता है। इसलिए भाषा का संबंध मात्र अभिव्यक्ति से न होकर चिन्तन से भी है। भाषा में इतनी क्षमता और विलक्षणता होती है कि वह पात्रनुकूल अपना कलेवर बदल लेती है। इस संदर्भ में 'आपका बंटी' की भाषा पर विचार करें तो ज्ञात होगा कि मन्नू भण्डारी ने पात्रों के जीवन की गतिविधियों एवं मानसिक स्थितियों के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है।

मन्नू भण्डारी की रुचि सरलता और सहजता की रही है। इसीलिए उन्होंने बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। इससे उनकी भाषा में रोचकता प्रवाहमयता, स्वाभाविकता आदि गुणों का समावेश हुआ है।

शब्द चयन

शब्द भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है, शब्दों के माध्यम से ही भाषा का निर्माण किया जाता है। उपन्यासकार ने उपन्यास की भाषा को सशक्त के लिए भावानुकूल शब्दों का चयन किया है। उन्होंने तत्सम, तदभव के अतिरिक्त उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग किया है।

तत्सम और तद्भव शब्दावली

उपन्यासकार कतिपय स्थलों पर शुद्ध तत्सम प्रधान भाषा का प्रयोग किया है। इस दृष्टि से शून्य, कृपणता, सायास, सन्नद्ध, परिदृश्य, असहय आदि शब्दों को लिया जा सकता है। तद्भव शब्दों में काहे, भेस, कइसे, एल्लो आदि। वैसे देखा जाए तो तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग उपन्यास में सीमित स्थलों पर हुआ है। समकालीन परिवेश का चित्रण होने के कारण पात्रों की भाषा शुद्ध खड़ी बोली है।

अंग्रेजी शब्दावली

उपन्यासकार ने सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का प्रयोग है जिनसे पाठक भली भांति परिचित है। उपन्यास के अधिकांश पात्र सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत हैं। इसलिए मन्नू भण्डारी जी ने उनकी मनः स्थिति को सटीक अभिव्यक्त करने के लिए अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है। एक उदाहरण के माध्यम से पुष्ट किया जा सकता है- "जहाँ जस्टिफिकेशन है। समझ लो, वहाँ गिल्ट है। आदमी अपने गिल्ट को जस्टिफाई न करे तो....।" बंटी के जाने के बाद शकुन अपने अपराध बोध को इस प्रकार प्रकट करती है। उपन्यास में प्रयुक्त कुछ और अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ जैसे–

एक्सीडेंट, नॉर्मल, क्यू, इगोइस्ट, इनहेरिस्ट, ब्लंटली, टॉरचर, अन्डरस्टैंडिंग, कोर्ट, हार्ट अटैक, हॉस्टल, पज़ैसीब, कनफेंशन, नर्वस, एडजस्ट, राइटिंग, स्केलिंग आदि शब्दों के अतिरिक्त अंग्रेज़ी वाक्यों का भी प्रयोग मिलता है-

लैट हिम ग्रो लाइक ए मैन, लाइक ए-बॉय।
डियर, यू हैव कम विथ योर फादर।
'ब्याट्स योर फादर' टेल मी अरूण।
माई, मम्मी ईज प्रिंसीपल।
नो, नो आई एम मिसेज जोशी।
राइट एक स्टोरी इन ओन वर्डस, एनी स्टोरी
यू लाइक।
आई मीन इट, इटस ए मस्ट।

इससे हमारे सामने दो बातें स्पष्ट होती है। एक शकुन जिस वर्ग से संबंध रखती है, उसमें अंगेजी भाषा का प्रयोग सामान्यतः खूब होता है। दो, इससे यह भी ज्ञात होता है कि मध्यवर्ग अंग्रेजी भाषा इस्तेमाल अपनी सामाजिक हैसियत को प्रदर्शित करने के लिए भी करता है वैसे मन्नू भण्डारी ने अंग्रेजी भाषा का प्रयोग उपन्यास में संदर्भगत अपेक्षा के कारण किया है। वह इसके द्वारा पात्रों के वर्ग चरित्र को उजागर करना चाहती है।

अरबी, फारसी शब्द

मन्नू ने विभिन्न भाषा के शब्दों का प्रयोग पात्रों, सार्थकता एवं संदर्भ की दृष्टि से किया है। उन्होंने इसके लिए अरबी, फारसी के शब्दों का प्रयोग, जो आज हमारी हिंदी भाषा में घुल-मिल गये हैं, भी किया है।

सलाम, जादू, जंगल, रौब, महक, आसमान, बहस, दोस्ती, तलाक, बेकार, हिम्मत, गायब, शायद, गुनाह, अदा, आवाज, सख्त, माफ आदि।

उपन्यासकार ने भाषा का प्रयोग पात्रानुकूल किया है। बंटी की मानसिक स्थिति की क्रियाशीलता और उद्वेलन की अभिव्यक्ति के लिए भी मन्नू जी की भाषा चूकती नहीं है। यहां एक उदाहरण दृष्टव्य- स्कूल में भूगोल की टीचर कलकत्ता के बन्दरगाह की बात करती है तो बंटी का मन कलकत्ता पर ही अटक जाता है, क्योंकि वहाँ पापा रहते हैं। तब उसके मन में तरह-तरह की शक्लें उभरती चली जाती है। उन शक्लों के बीच में उसे पापा एक बंदर की शक्ल में दिखाई देते हैं-

"कलकत्ता....और देर सारे बंदरों के बीच पापा का चेहरा दिखाई देने लगता है। पापा के तरह-तरह के चेहरे। कितनी बार उसने सोचा, पर पापा को चिट्ठी नहीं लिखी। अच्छा पापा ही लिख देते। उन्हें क्या मालूम नहीं कि मम्मी उसे लेकर दूसरे घर आ गई है। वकील चाचा भी कितने दिनों से नहीं आये।"

इसी भांति मन्नू भण्डारी ने जादू, धुरी, लाल तिकोन, हार्ट अटैक आदि शब्दों को विभिन्न संदर्भों में प्रयोग किया है।

यह भी उल्लेखनीय है कि उपन्यासकार ने शब्दों में नवीन अर्थ भरने का प्रयत्न भी किया है। वैसे भी अज्ञेय ने कहा है जिस तरह बर्तन अधिक मांजने से उसका मुल्लमा उतर जाता है। उसी प्रकार शब्दों को अधिक प्रयोग करने पर उनके अर्थ देवता कूच कर जाते हैं। अतः उनमें नवीन अर्थ भरने की चेष्टा करनी चाहिए। मन्नू भण्डारी ने परंपरागत शब्दों को नई अर्थवत्ता प्रदान की है। - "मैं जानता हूँ कि तुम्हें इस बात में तरह-तरह की 'गंध' आ रही होगी।" इस वाक्यांश में 'गंध' 'सूंघने' के संदर्भ में प्रयुक्त होता है, लेकिन मन्नू जी ने चमत्कार उत्पन्न करने एवं अभिव्यक्ति को सशक्तता प्रदान करने के लिए लक्ष्यार्थ शब्द का इस्तेमाल किया है।

मुहावरे एवं लोकोक्तियां

भाषा को चटक एवं सजीव बनाने हेतु मुहावरों का सुन्दर प्रयोग किया है। यह विशेष रूप से शकुन के अंतर्द्वंद्व एवं संघर्ष की तीव्रता के संदर्भ में देखा जा सकता है- "सच पूछा जाये तो अजय के न रह पाने का दंश नहीं है, वरन् अजय को हरा न पाने की चुभन है जो उसे उठते-बैठते सालती रहती है।"

'आपका बंटी' में अनेक मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग मिलता है जो भाषा की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति को शक्तिमत्ता ही प्रदान नहीं करती साथ ही कथ्य को भी प्रभावशाली बनाते हैं। कुछ उदाहरण यहां प्रस्तुत है-

मर्दानगी दिखाना, मट्टी पलीद होना, आंखों से आग बरसाना, तिलमिला जाना, उड़ती सी नजर डालना, भाड़ झोंकना, ताव आना, खून जलाना, खाई पाटना, सेतु बनाना, घुटने टेकना, तिलकर टूटना, निरे शून्य से बदलकर, नजरों की चुभन आदि।

'आपका बंटी' एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इसमें बाह्य क्रिया-कलापों का चित्रण साधारण बोल चाल की भाषा में हुआ है, वहीं मन के ऊहापोह एवं अंतर्द्वंद्व का चित्रण गम्भीर एवं वैचारिक भाषा में हुआ है। पात्रों के अहंभाव, अंतर्द्वंद्व, कुण्ठाओं, विद्रुपताओं और विसंगतियों का चित्रण करते समय उनके व्यक्तित्व और चरित्र को ध्यान में रखा है। बंटी के आक्रोश, हीनभावना, कुण्ठित व्यक्तित्व का चित्र भाषा के द्वारा प्रस्तुत किया गया है- "झूठ उसे नहीं करनी किसी से दोस्ती, आगे से वह कभी आएगा भी नहीं उनके साथ। डॉक्टर साहब, मम्मी आगे की खिड़कियों में बैठे हैं और जोत तथा अभि पीछे की खिड़कियों पर, बस वही फ़ालतू सा बीच में बैठा है।"

इसी भांति शकुन का अजय से प्रतिशोध, उसे न हरा पाने की पीड़ा, कसक, छटपटाहट का वर्णन भी सजीव हुआ है। जैसे- "वह फिर छली गई। वह फिर बेवकूफ बनाई गई। उसका रोम-रोम जैसे सुलगने लगा।"

X X X X

"नहीं, उसे कुछ कनफेस नहीं करना। आदमी शायद कनफेस इसलिए नहीं करता है कि दूसरों की नजरों में गुनाहागार बनकर अपनी नजरों में बेगुनाह हो जाए। वह अपने गुनाहों का स्वीकार नहीं करता, बड़ी निरीहता के साथ उन्हें दूसरों के कंधों पर डालकर स्वयं उनसे मुक्त हो जाता है।"

इस प्रकार उपन्यास में सजीवता लाने के लिए पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है। साथ ही पात्रों की मनःस्थितियों, अंतर्द्वंद्वों, टूटन, मानसिक सक्रियता को पकड़ने में भी भाषा समर्थ है। जो पात्रों की आंतरिक एवं बाह्य क्रिया-कलापों को पूर्णतः अभिव्यक्त भी करती है।

शैली

शैली को व्यक्तित्व का प्रतिरूप माना जाता है। अपनी पृथक शैली द्वारा ही लेखक अपने व्यक्तित्व का परिचय देता है। किसी भी रचना की कथानक संघनता या सपाटता, चारित्रिक निर्वाह, संवादों की विस्तृतता, क्षिप्रता तथा उद्देश्य की स्थूलता या सांकेतिकता के मूल में कृतिकार की शैली ही कार्यरत होती है।

'आपका बंटी' उपन्यास मुख्यतः वर्णनात्मक शैली में रचित है। उपन्यास का आरंभ मम्मी के तैयार होने के वर्णन से किया गया है। बंटी मम्मी के पीछे खड़े होकर बड़े कौतूहल से उस सारे कार्य व्यापार को देखता है। इसके उपरांत मम्मी के कॉलेज, वहाँ के लोगों के वर्णन द्वारा कथा को आगे बढ़ाया गया है।

"पहले जब कभी उसकी छुट्टी होती है और मम्मी की नहीं होती, मम्मी उसे भी अपने साथ कॉलेज ले जाया करती थी। चपरासी उसे देखते ही गोद में उठाने लगता तो वह हाथ झटक देता। मम्मी के कमरे में एक कोने में ही उसके लिए छोटी सी मेज कुर्सी लगवा दी जाती, जिस पर बैठकर वह ड्राइंग बनाया करता।"

पात्रों की मनःस्थितियों, द्वंद्व को चित्रित करने के लिए विश्लेषणात्मक और चेतना प्रवाह शैली का प्रयोग किया है।

विश्लेषणात्मक शैली

"डॉक्टर जान ले कि इस घर के लिए बंटी अनावश्यक हो, फालतू हो, पर कोई है, एक ऐसा भी घर है जहाँ बंटी की आवश्यकता है, बंटी की प्रतीक्षा है। यहां बंटी एक जिद्दी और एवनॉर्मल बच्चा हो सकता है। पर वहां....कि अजय का शकुन से चाहे कोई संबंध न रहा हो, पर बंटी से उसका संबंध है, आत्मीयता का, अपनत्व का, रक्त का, अब बंटी को लेकर वह इतना अपराधी महसूस नहीं करेगी।

चेतना-प्रवाह शैली

बंटी के सामने ढेर सारी कहानियां तैर रही हैं। मम्मी की कहानियां, फूफी की कहानियां, पर उन सबको कैसे लिखा जा सकता है। वह तो जबाव ही नहीं दे सकता। सर ने क्या समझा होगा? पापा क्या कहेंगे?

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'आपका बंटी' में पात्रों के अवचेतन मन के द्वंद्व, हताशा, संत्रास और रिक्तता को दर्शाने के लिए सम्यक भाषा का प्रयोग किया गया है। उनकी भाषा शैली मनोवैज्ञानिकता एवं मनोविश्लेषणात्मकता को रेखांकित करती है। यहां भाषा कथ्य से नहीं पात्रों के व्यक्तित्व और विचारों से अधिक जुड़ी है। सहजता, सरलता, प्रवाहमयता, संबद्धता, रोचकता आदि गुणों के कारण यह भाषा पात्रों की मनःस्थितियों का प्रमाणिक दस्तावेज प्रस्तुत करती है। यहां डॉ. सुरेश सिंहा के शब्दों में कह सकते हैं कि "इस उपन्यास में भावाभिव्यंजना की सूक्ष्मता एवं भाषा की नई अर्थवत्ता का सौंदर्य है, जिसकी विशेष चर्चा होनी चाहिए। इधर कम ही उपन्यास ऐसे हैं जिनमें चमत्कारों एवं कृत्रिमों दुर्बोधता से बुद्धिवाद का भ्रम उत्पन्न करने और जीवन की गहराई को चित्रित करने के मायाजाल से बचाकर आज की जिन्दगी के चित्रों को भाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

आपका बंटी में प्रयुक्त लोक कथाओं की प्रतीकात्मकता

सामान्यतः परिवारों में छोटे बच्चों को उनके माता-पिता, दादा-दादी आदि राजा- महाराजाओं, देवी-देवताओं या जादू, परियों की लोक कथाएँ सुनाया करते हैं। इसमें उनका मुख्य ध्येय बच्चों का ज्ञानवर्धन के साथ-साथ मनोरंजन एवं कल्पना शाक्ति का विकास करना होता है। बच्चों के बौद्धिक विकास में परिवार एवं परिवेश के साथ-साथ इन कहानियों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। इसीलिए बच्चों के स्वस्थ शारीरिक एवं मानसिक के लिए ज्ञानवर्धक कथाएं सुनाई जाती हैं। बच्चों का बालमन एक खाली 'केनवास' की भांति होता है जिसमें जैसा रंग डाला जाता है वैसा चित्र उभरता है। वैसे अधिकांश परिवारों में बच्चों को भूत-प्रेत-जादू आदि की डरावनी कहानियां ही सुनाई जाती हैं क्योंकि ये कहानियां रोचकता एवं कौतुहलता उत्पन्न करती हैं। इससे इन कहानियों को बच्चे बड़ी उत्सुकता से सुनते हैं। वे इन कहानियों के आधार पर वैसे ही कल्पना का निर्माण करते हैं। ये कहानियां कभी उनके मानसिक विकास पर प्रतिकुल प्रभाव भी डालती हैं जैसा कि बंटी के प्रसंग में हुआ है। इससे उनके मानसिक विकास में अवरोध उत्पन्न होता है। वे इन कथा कहानियों के आधार पर धारणाएं बनाकर उनके सदृश्य वस्तुओं से भयभीत रहने लगती हैं इन कथा-कहानियों का इन्द्रजाल उनके मानस को इतना ग्रसित करता है कि वे अपने परिवेश की तुलना उसी काल्पनिक वातावरण से करने लगते हैं जो उन कथा-कहानियों में होता है।

बंटी को भी फूफी तथा मम्मी ऐसी ही जादू तथा तिलस्म की कहानियां सुनाती हैं। फूफी सोनल रानी की कहानी सुनाती है जो डायन होने के कारण जादू के बल पर रूप बदलती रहती है। भूख लगने पर अपने सौतेले बच्चों को ही खा जाती है। तो वही मम्मी सात भाई चम्पा की कहानी उसे सुनाती है। जो अपनी मम्मी के लिए ऊँचे-ऊँचे पहाड़ पार कर जाते हैं और समुद्र तैर जाते है। ऐसी कहानियां सुनाने के पीछे दोनों का मन्तव्य बंटी को मम्मी के प्रति समर्पित रखना था क्योंकि अजय ने

शकुन को छोड़कर नया घर बसा लिया था। पापा से बंटी को दूर करने के लिए ही उसके मानस में नई मम्मी या सौतेली माँ का भय उत्पन्न किया जाता है। ताकि बंटी कभी अपनी मम्मी को छोड़कर पापा के पास न जाने की जिद करे। उसे अपने पक्ष में करने तथा पापा व सौतेली माँ के प्रति उनसे मन में खौफ उत्पन्न करने फूफी तथा मम्मी ऐसी कहानियां सुनाती है। परंतु बंटी पर इन कहानियों का विपरीत प्रभाव पड़ता है। वह इनके आधार पर यह धारणा बना लेता है कि इस दुनिया में वास्तव में जादू जैसी कोई चीज है जिसको लोग अपना रूप बदल लेते हैं। यह धारणा उसके मानस में इतनी गहरी बैठ जाती है कि वह वास्तविकता एवं कल्पनालोक में भेद नहीं कर पाता। वह घर में घटनेवाली घटनाओं की तुलना इन कहानियों से करता है। ये कहानियां उसके मानस पर इतनी हावी हो जाती हैं कि वह जहाँ भी जाता है उसका जादू व वे पात्र उसके साथ रहते हैं—"बंटी पीछे आंगन में आया तो झम-झम करती सोनल रानी भी साथ आ गयी। सात मंजिले महल में रहने वाली, सात सौ दास-दासियों से घिरी सोनल रानी। ऐसा रूप कि न लोगों ने देखा न सुना। राजा तो जैसे प्राण देते। कोई भला देखता भी कैसे। वह रूप क्या कोई आदमी का था? वह तो डायन का जादू था।" धीरे-धीरे इन कहानियों का प्रभाव इतना वढ़ जाता है कि घर तथा मम्मी में आने वाले परिवर्तन का संबंध वह जादू से जोड़ता है। मम्मी जब कॉलेज जाने के लिए तैयार होती है तो बंटी उत्सुकता से मम्मी को देखता रहता है। मम्मी के चेहरे पर प्रशासनिका का रौब देखकर सोचता है कि मम्मी के पास जैसा कोई दूसरा चेहरा है, चेहरा ही नहीं बल्कि आवाज भी है, तभी तो बोलती है तो कैसे सख्त हो जाती है। उसे मम्मी का यह रूप इतना आक्रांत करता है कि वह उसके कारणों की खोज के लिए घंटों ड्रेसिंग टेबल के पास खड़ा रहता है। वहाँ रखी चीजों को उलट-पुलट करता रहता है। उसे पता है कि इन्हीं चीजों के लगाने पर ही मम्मी भी बदल जाती है। वहाँ रंग-बिरंगी शीशियों को देखकर वह दहशत से भर जाता है। उसे लगता है कि वह जादू जरूर इन शीशियों में है। उस शीशी से इतना आतंकित हो जाता है कि वह उस शीशी को मैदान में खाली करने के उपरांत भी उसे लगता है कि वह शीशी खाली नहीं हो रही है। वह उस स्थान पर ढेर सारी मिट्टी डालकर उसके आतंक से मुक्त होने का प्रयास करता है, लेकिन "सिनेमा में देखे कॉर्टून फिल्म की तरह उस शीशी के हाथ, पैर, आँख नाक निकल आये हैं और वह ही बड़ी देर तक उसके आगे पीछे नाचती रही हो।" शीशी के आतंक के कारण कमरे में जाने से डरता है। अगर कभी जाता भी है तब भी उसकी आँखें शीशी को ही खोजती रहती हैं और शीशी न पाकर उसे राहत मिलती है।

इन जादूई कहानियों का प्रभाव उसके मानस पर इतना अधिक पड़ता है कि वह उसके सोचने समझने का हिस्सा बन जाती है। वह वस्तुओं को उसके वास्तविक

रूप में न देखकर उनको अपने जादूई लोक के आधार पर रूपाकार देने लगता है। ज्यों-ज्यों उसके घर की परिस्थितियां जटिल होती जाती है, त्यों-त्यों इन कहानियों का प्रभाव भी बंटी पर बढ़ता जाता है। वह घर में अंधेरे से डरने लगता है, उसे उस अंधेरे में राक्षस की लपलपाती जीभ, उल्टे पंजे और सींगों वाला सफेद भूत, तीन आँखों वाली चुड़ैल, जादूई नगरी में नाचते हुए हड्डियों के ढाँचे अपने चारों ओर नाचते दिखाई देते हैं।

इस प्रकार इन कहानियों के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयत्न किया गया है कि घर की असामान्य स्थितियों में सुनाई गई ये कहानियाँ किस प्रकार उसके मानसिक विकास को अवरूद्ध कर देती हैं। शकुन ने बंटी की संवेदनशीलता को अपने प्रति झुकाने के लिए ऐसी कहानियां सुनायी है। इसके अतिरिक्त इन कहानियों का प्रतीकात्मक रूप भी है। सोनल रानी भूख लगने पर अपने ही बच्चों को खा जाती है। इसी तरह शकुन भी अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए बंटी को दांव पर लगा देती है। सात भाई चम्पा राजकुमार अपनी माँ के प्यार के लिए बड़ी से बड़ी मुसीबत झेल जाते हैं लेकिन अंत में माँ उनको मार डालती है, बंटी भी माँ के लिए पापा के प्यार को ठुकराता है, लेकिन मम्मी अपना पुनर्विवाह बचाने के लिए बंटी को पापा के पास भेज देती है। वह अपने घर की रक्षा के लिए बंटी को बलि चढ़ा देती है।

इस प्रकार उपन्यास के कथानक में प्रयुक्त लोक-कथाएं संवेदना के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है।

आपका बंटी की मनोवैज्ञानिकता

मनोविज्ञान मन का विज्ञान है। यह विज्ञान की सबसे विकसित शाखा है। मनोविज्ञान अंग्रेजी के 'साइकालॉजी' शब्द का पर्यायवाची है। इसमें मन का विश्लेषण और विचार विमर्श किया जाता है। मन की विविध क्रिया और मानवीय स्वभाव की मूल प्रवृत्तियों का अध्ययन भी इसके अन्तर्गत किया जाता है। वस्तुतः इसमें मनुष्य की वृत्तियों और व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

'आपका बंटी' में बंटी के व्यवहार का अध्ययन विश्लेषण, मनोवैज्ञानिक धरातल पर करना आवश्यक है। उपन्यास का कथानक बंटी केन्द्रित है। उपन्यास के आरंभ में बंटी सामान्य बालक की तरह व्यवहार करता है लेकिन जैसे-जैसे स्थितियां जटिल होती जाती हैं बंटी सामान्य बालक के स्थान पर जटिलताओं से ग्रसित होने लगता है और अंत तक वह एक विक्षिप्त बालक में तब्दील हो जाता है। उसके माता-पिता के रिश्ते उसके बालमन को प्रभावित करते हैं। वह 'प्रौब्लम चाइल्ड' में बदल जाता है। इसलिए इस पूरी स्थिति में बंटी के व्यवहार का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना आवश्यक प्रतीत होता है।

आधुनिक युग की भागदौड़ पूर्ण एवं प्रतिद्वन्द्वितायुक्त परिवेश में व्यक्ति के मनोविज्ञान को समझना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मनुष्य की आन्तरिक प्रेरणा ही उसके व्यवहार को संचालित करती है। यही कारण है कि व्यक्ति के व्यवहार में विविधता लक्षित होती है। यदि व्यक्ति के अंतर्मन को समझ लिया जाए तो उसके व्यवहार के पीछे कार्य करने वाली स्थितियों को जाना जा सकता है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में फ्रायड, एडलर और युंग के विचार महत्त्वपूर्ण हैं। फ्रायड के अनुसार मन के भीतर कुछ मानसिक शक्तियां दबी पड़ी रहती हैं जो मस्तिष्क में संघर्षशील स्थितियां उत्पन्न करती है। इसी संदर्भ में उन्होंने मन की तीन शक्तियों की कल्पना की चेतन मन, अचेतन और अवचेतन मन।

मनुष्य की नित्य प्रति के साधारण क्रिया-कलापों में 'चेतन मन' कार्य करता है। इसी चेतन मन में अतृप्त दबी भावनाएं-वासनाएं रहती हैं। वे दमित अतृप्त भावनाएं अभिव्यक्ति के लिए संघर्ष करती है। 'अचेतन मन' अनुभवों तथा

सामाजिक वातावरण के दबाव से बनी हुई प्रवृत्तियों का ढेर होता है। व्यक्ति के मन का अविकसित अंश ही 'अचेतन मन' है। बचपन की अनैतिक, अधार्मिक, असामाजिक इच्छाएं तथा व्यवहार 'अचेतन मन' द्वारा संपन्न होते हैं। मानव की आदिम वासनाएं इसी में रहती हैं, इसे फ्रायड 'यौन वासनाएं', एडलर ने 'हीनता ग्रंथि' और चुंग न 'जीवनैच्छा' कहा है।

'चेतन मन' सामाजिक बंधनों के कारण जिन आदिम वासनाओं को दमित करता है। वे अचेतन मन में एक प्रकार के दलदल की सृष्टि करती है जिन्हें ग्रंथियां कहते हैं। ये ग्रंथियां हिस्टीरिया, नर्वसनेस, उन्माद और यौन विकृतियों को जन्म देती है। अचेतन मन में वे इच्छाएं रहती हैं जिन्हें चेतन मन से निकाल दिया जाता है। अनुचित और अग्राह्यता के कारण कुछ इच्छाएं कभी भी चेतन में स्थान नहीं पा सकती हैं। अतः वे अचैतन मन में चली जाती है।

'चेतन' और 'अचेतन' मन के बीच 'अवचेतन' मन होता है। इसमें ऐसे विचार और भावनाएं रहती हैं जिनका हमें ज्ञान नहीं होता, पर समय और परिस्थिति के अनुकूल होते ही वे चेतन मन में प्रवेश पा लेती है। अतः ऐसे विचार और भावनाएं जिनका हमें ज्ञान नहीं होता, पर जिन्हें चाहने पर चेतन मन में लाया जा सकता है। वे अवचेतन मन में रहती है। फ्रायड ने व्यक्तित्व का निर्माण इन्ही तीन मानसिक शक्तियों के पारस्परिक संगति से माना है। उन्होंने व्यक्तित्व एवं मस्तिष्क को संचालित करने वाली शक्तियों को 'लिबिडो' कहा है। यह वह 'काम शक्ति है जो व्यक्ति के मन में आत्मरति, रति-प्रेम, मातृ-पितृ प्रेम, वात्सल्य, मैत्री, आकर्षण, ममत्व, सहानुभूति, श्रद्धा आदि की उत्पत्ति करती है। यह काम शक्ति अहं, इदम अत्यंहम् में वर्गीकृत हुई है। यह मानसिक अवस्थाओं में कार्य करती है।

काम-वासना प्राणीमात्र की मूलभूत वृत्ति है जो जन्मतः विद्यमान रहती है। यह तुरंत शमन के लिए क्रियाशील रहती है। यही इदम है। इससे भिन्न अहम् चेतन मन है जो इदम में स्थिति दमित इच्छाओं और कुण्ठाओं को रोककर व्यक्तित्व और सामाजिक नैतिक मूल्यों के प्रति सचेत करता है। अर्थात् सभ्यता एवं सांसारिक मांगों के अनुरूप अपने व्यक्तित्व को परिवर्तित करता है। अहम् का आदर्श रूप अत्यहम् है जो इदम और अहम् को नियंत्रित करता है। व्यक्ति की वैचारिक, नैतिक संस्कार मूल्य आदि अत्यहम् द्वारा प्रगट होते हैं।

इस प्रकार मन की सभी क्रियाएं मनोविकार है और अंततः इनका संबंध काम शक्ति से ही होता है। यह जीवन की आवश्यकता है। इसकी अतृप्ति से अनेक मनोविकार उत्पन्न हो जाते हैं। इससे व्यक्ति अनेक विकृतियों से ग्रस्त हो जाता है। हीनताग्रंथि एवं उच्चभावना ग्रंथि इसी से संबंद्ध हैं। ये व्यक्ति के विकास में बाधा उत्पन्न करती है।

इसी भांति व्यक्ति की प्रत्येक क्रिया मूलरूप से उसके मस्तिष्क से जुड़ी होती है।

फ्रायड के पश्चात् उनके सिद्धांतों में कई विद्वानों ने महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए गए। आधुनिक मनोविश्लेषण कर्ता यौन इच्छाओं को कम महत्त्व देते हुए सामाजिक अनुभवों और अंतःक्रियाओं को व्यक्ति के विकास में अधिक महत्त्व देते हैं। इस दिशा में ऐरिक होमबर्ग ऐरिकसन का योगदान उल्लेखनीय है। इन्होंने बाल विकास की ओर ध्यान केन्द्रित किया। इनके अनुसार फ्रायड ने बालक की सामाजीकरण, सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों तथा प्रतिरूपों पर अधिक ध्यान नहीं दिया, साथ ही किशोरावस्था के बाद होने वाले विकास को भी नहीं पहचाना। बाद के मनोविश्लेषकों ने बच्चों के विकास का विश्लेषण किया और यह समझने का प्रयास किया कि सामान्यतौर पर व्यक्ति किस प्रकार विकास करते हैं और विभिन्न स्थितियों में किस प्रकार प्रतिक्रिया करते हैं। इस अध्ययन में जो बिन्दु उभरकर आये उनमें वंशानुक्रमता, वातावरण और परिपक्वता प्रमुख है।

बंटी के संदर्भ में विश्लेषण करने पर यह तथ्य स्पष्ट होता है कि बंटी पर वंशानुगत प्रभाव दिखाई पड़ता है। वंशानुगत प्रभाव बच्चे को गर्भावस्था में माता-पिता से जैविकीय रूप से प्राप्त होता है। 'आपका बंटी' में भी फूफी इस तथ्य को इस प्रकार व्यक्त करती है—"कैसे आदमी एक छोटे से अणु में अपने चेहरा, मोहरा, आदत, स्वभाव, संस्कार सब कुछ अपने बच्चे में सरका देता है।"

बंटी में अजय और शकुन का 'अहं' भाव सम्मिलित है। जिस प्रकार अजय और शकुन दोनों अपने अहं के समक्ष एक दूसरे को परास्त करना चाहते हैं, दोनों में से कोई भी पूर्णतः समर्पण नहीं कर पाता। उसी भांति बंटी भी अपनी मम्मी पर एकाधिकार चाहता है। इसीलिए वह मम्मी को डॉ. जोशी के साथ देखकर सहज नहीं हो पाता बल्कि अपना विरोध प्रकट करता है। बंटी में अपने माता-पिता की 'पजेसिवनेंस' गहरे रूप में समाई हुई है।

वंशानुगत के बाद वातावरण भी बच्चे के मनोविकास में भूमिका निभाता है। उसका सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा आस-पड़ोस, उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि उसके व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करते हैं। एकल परिवारों में जहाँ माता-पिता दोनों ही काम काजी होने के कारण बच्चे को माता-पिता का पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। इससे उनका भावात्मक विकास बाधित होता है। जबकि पहले संयुक्त परिवार की संरचना में बच्चों को दादा-दादी या चाचा-चाची या परिवार के सदस्यों का स्नेह व संरक्षण मिलता रहता था। इस स्थिति में उनका भावात्मक विकास सामान्य रूप में विकसित होता था। लेकिन आज के महानगरीय एकल परिवारों में प्रेम व स्नेह से बंचित बच्चों में अनेक प्रकार की जटिलता उत्पन्न होने लगी है।

और स्थिति तब और विकट हो जाती है जब माता-पिता का तलाक हो जाता है। माता या पिता के स्नेह व वात्सल्य से वंचित होने लगता है तो उससे उसका विकास प्रभावित होता है।

'आपका बंटी' में बंटी भी इस पहलू से प्रभावित होता है। उसके माता-पिता में तलाक हो चुका है और वह अपनी मम्मी के साथ रहता है। पापा कभी-कभी उससे मिलने आते हैं। वह दोनों का स्नेह एक साथ नहीं प्राप्त कर पाता। वह अपने माता-पिता दोनों से प्रेम करता है इसलिए वह दोनों में दोस्ती करवाना चाहता है परंतु वह ऐसा कर नहीं पाता। मम्मी से वह अतिरिक्त रूप से जुड़ा है क्योंकि पापा से मम्मी का तलाक के बाद वह मम्मी की खुशियों का ध्यान रखने की चेष्टा करता है। कुछ भी करके माँ को यह भरोसा दिला देना चाहता है कि वह उन्हें कभी भी नहीं छोड़ेगा। मम्मी को रोता देखकर वह एकाएक बड़ा हो जाता है। यहीं से उसका जीवन में परिवर्तन आरंभ होने लगता है। वह एक नटखट, शरारती बच्चे से अचानक समझदार बनने लगता है।

"मम्मी का रोना बंटी को एकाएक बड़ा बना गया। बड़ा और समझदार भी। मम्मी की पापा से लड़ाई हो गई है, पक्की वाली।....अब मम्मी के लिए जो भी है बंटी ही है। .....मम्मी के एकमात्र सहारे बंटी के ऊपर जैसे हजार-हजार जिम्मेदारियां आ गई हैं मम्मी को प्रसन्न रखने की।" अब बंटी कोई ऐसा काम नहीं करता जिससे मम्मी को कष्ट हो। इसके अतिरिक्त वह निश्चय करता है कि पापा की कोई बात भी नहीं करेगा। इसके लिए वह पापा के दिए खिलौने को अलमारी में बंद कर देता है। यहां तक की पापा की एकमात्र तस्वीर भी उन खिलौनों के साथ रख देता है—"रैक पर रखी हुई पापा की एकमात्र तस्वीर को भी उसने एक दिन चुपचाप खिलौनों की अलमारी में बंदकर दिया—मम्मी से लड़ाई कर ली तो अब बैठो यहां, और क्या? सारे दिन मम्मी को उदास रखने वाले, रूलाने वाले पापा की यही सजा है, बस। और उसे लग जैसे मम्मी की ओर से उसने पापा के खिलाफ एक बहुत बड़ा कदम उठाया है।"

वस्तुतः देखें तो यहां यह स्पष्ट होता है कि मम्मी पापा के तलाक से वह अचानक ही बड़ा बन जाता है। उसका बचपन एकदम से पीछे छूट जाता है और वह एक समझदार व्यक्ति की तरह व्यवहार करने लगता है।

वहीं पर दूसरी तरफ जब शकुन डॉ. जोशी से संबंध जोड़ती है, उनसे शादी कर लेती है तो वह अपने एकाधिकार में बाधा देखकर 'पजेसिव' हो जाता है। वह मम्मी को किसह अन्य पुरुष के साथ देखकर उसके भीतर अनेक विकृतियां उत्पन्न होने लगती हैं। वह चिड़चिड़ा, विद्रोही एवं असन्तुलित हो जाता है। वह अपना

विरोध मम्मी के साथ झगड़ा कर के प्रकट करता है। वह डॉ. जोशी को अपने पिता के रूप में स्वीकार करने से मना कर देता है–

"बिल्कुल नहीं, एकदम नहीं, मेरे पापा अजय बत्रा हैं। कलकत्ते में रहते हैं।"

उसका विरोध, मानसिक व्यथा उसे विद्रोही एकाकी, मायूस, ईर्ष्यालु, उदास और गुमसुम बालक बना देता है। वह अपने सौतले भाई बहन अभि और जोत से ईर्ष्या करने लगता है। मम्मी से भी प्रतिशोध लेने के असहयोग करने लगता है। जिस मम्मी के लिए वह समझदार बनता है वही अब वह उसे कष्ट देने के लिए व्यग्र हो जाता है। मम्मी को अपमानित करके अब से शान्ति अनुभव होती है। वहीं दूसरी तरफ वह डॉ. जोशी के घर में स्वयं को फालतू और अवांछनीय महसूस करने लगता है–"इस देश में तीन नहीं, दो, बस दो बच्चे पैदा करने चाहिए। तीसरा बच्चा फालतू बच्चा तीसरा बंटी, फालतू बंटी....फालतू बंटी बस के लिए खड़ा है"

बंटी का अवचेतन मन अब हमेशा विरोध करने के लिए प्रेरित करता है। मम्मी से बदला लेने के लिए वह उसे परेशान करना चाहता है–"यहां आकर जाने कैसे मम्मी को परेशानी और दुख के साथ उसका संतोष और सुख जुड़ जाता है।" वह मम्मी को परेशान देखने के लिए अपने पापा के पास कलकत्ता जाना चाहता है किंतु अंतर्मन में उसकी आशा है कि मम्मी उसे किसी बहाने से रोक भी ले। पापा के पास वह जाना नहीं चाहता लेकिन सिर्फ मम्मी को परेशान और बदला लेने के लिए वह कलकत्ता पापा के पास जाना चाहता है। इस कार्य से न वह स्वयं दुखी एवं टॉरचर होता है। प्रत्यक्ष रूप से वह मम्मी को भी टॉरचर करता है। वह स्वयं इस कष्ट में मानसिक यंत्रणा से गुजरता। यहां पर इस कृत्य से उसके अहम् को संतुष्टि मिलती है।

वस्तुतः देखा जाए तो बंटी की पारिवारिक परिस्थितियां ही उसके विकास को प्रभावित करती है। एकल परिवार की यह विडम्बना है कि बच्चा माता-पिता के अतिरिक्त किसी का सानिध्य नहीं प्राप्त कर पाता। शकुन और अजय जैसे विघटित परिवारों में अकसर बच्चे अकेले पड़ जाते हैं। बंटी भी मम्मी-पापा के पुनर्विवाह के बाद एकाकी हो जाता है। वह परिस्थितिवश जटिल, कुण्ठित और अवनॉर्मल हो जाता है। इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उपन्यासकार ने बंटी के संदर्भ में बाल मनोविज्ञान का बारीकी से चित्रण किया है और वह सामान्य पात्र न होकर विशिष्ट पात्र बन गया है। उसकी मनःस्थिति तथा परिणति आधुनिक दाम्पत्य संबंधों के निरीक्षण का अवसर देती है।